Today's Poem – 31.05.2014

तुम्हें कभी भी विघ्न रूप नहीं बनना है

कमी निकाल सच्चा हीरा बनना है

अपवित्रता है पहला डिफेक्ट

उससे पड़ता आत्मा पर बुरा इफ़ेक्ट

अपनी जाँच करनी है कहाँ तक हमारी याद बाप तक पहुँचती है

वृत्ति और तरफ़ तो नहीं भटकती है

सबको सुख देना है

प्यार से बाप को याद करना है

प्रकृतिपति की सीट पर हो जाओ सेट

परिस्थितियां नहीं करेंगी अपसेट

जो परमात्म कार्य में सहयोगी

विश्व बनेगा उसका सहयोगी

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!